शेख़ फ़रीद – सबद ७८

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥

सलोक, गुरु अर्जन, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥७५॥

सार: हर दीपक अलग दिखता है, फिर भी आग बँटी नहीं है। इसकी रोशनी, दूसरी रोशनी से वास्तव में अलग नहीं होती बस पात्र के आकार अलग होते हैं। समुद्र और उसकी लहरें अलग नहीं हैं, लहरें सामायिक होती हैं जबकि समुद्र सदा रहने वाला स्रोत है। हम जिन्हें कई स्वरूप में देखते हैं, वह बस एक ही ऊर्जा से पैदा होने वाले रूप हैं। मूलभूत एकत्व की धारणा बताती है कि धागे और वस्त्र का सार एक ही है। स्रोत सिर्फ़ छिपी हुई शक्ति नहीं बल्कि यह जीवन के हर पहलू में मौजूद है जो हम सभी को एक जीती-जागती एकता में जोड़कर, एक ही सच्चाई के दो पहलुओं को दिखाता है।

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
फ़रीद कहते हैं कि सृष्टिकर्ता सृष्टि में है और सृष्टि उसी सर्वव्यापी सत्ता में स्थित है। यह आपस में परस्पर जुड़ाव का सिद्धांत दर्शाता है, जहाँ कर्ता और कृति के बीच का फ़र्क एकल अस्तित्व का आपस में जुड़ाव है।

मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥७५॥
जब उस अकेली, सर्वव्यापी सच्चाई के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है तब हम किसे बुरा या कमतर कह सकते हैं? यह इस निर्णय की सच्चाई को चुनौती देता है कि किसी भी हिस्से की बुराई करना, वास्तव में, पूरी दिव्यता की बुराई करना है क्योंकि इस एकता के अलावा कुछ भी मौजूद नहीं है। जब उसके सिवा कुछ भी नहीं तब किसी को बुरा कैसे कहा जा सकता है। (७५)

तत्त्व: गुरु अर्जन, शेख़ फ़रीद के इस सुझाव की पुष्टि करते हैं कि जब हम अस्तित्व के स्रोत को ऐसी शक्ति के रूप में पहचानते हैं जो पूरी सृष्टि में व्याप्त है और सृष्टि को भी उसी सार में समाहित देखते हैं तब अलगाव का विचार कम कठोर लगता है। इस नज़रिए से, किसी को बुरा या कमतर कहना सच्चाई के बजाय, सीमित नज़रिए से पैदा होने वाली प्रतिक्रिया जैसा लगने लगता है क्योंकि सभी में सामान्यता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com